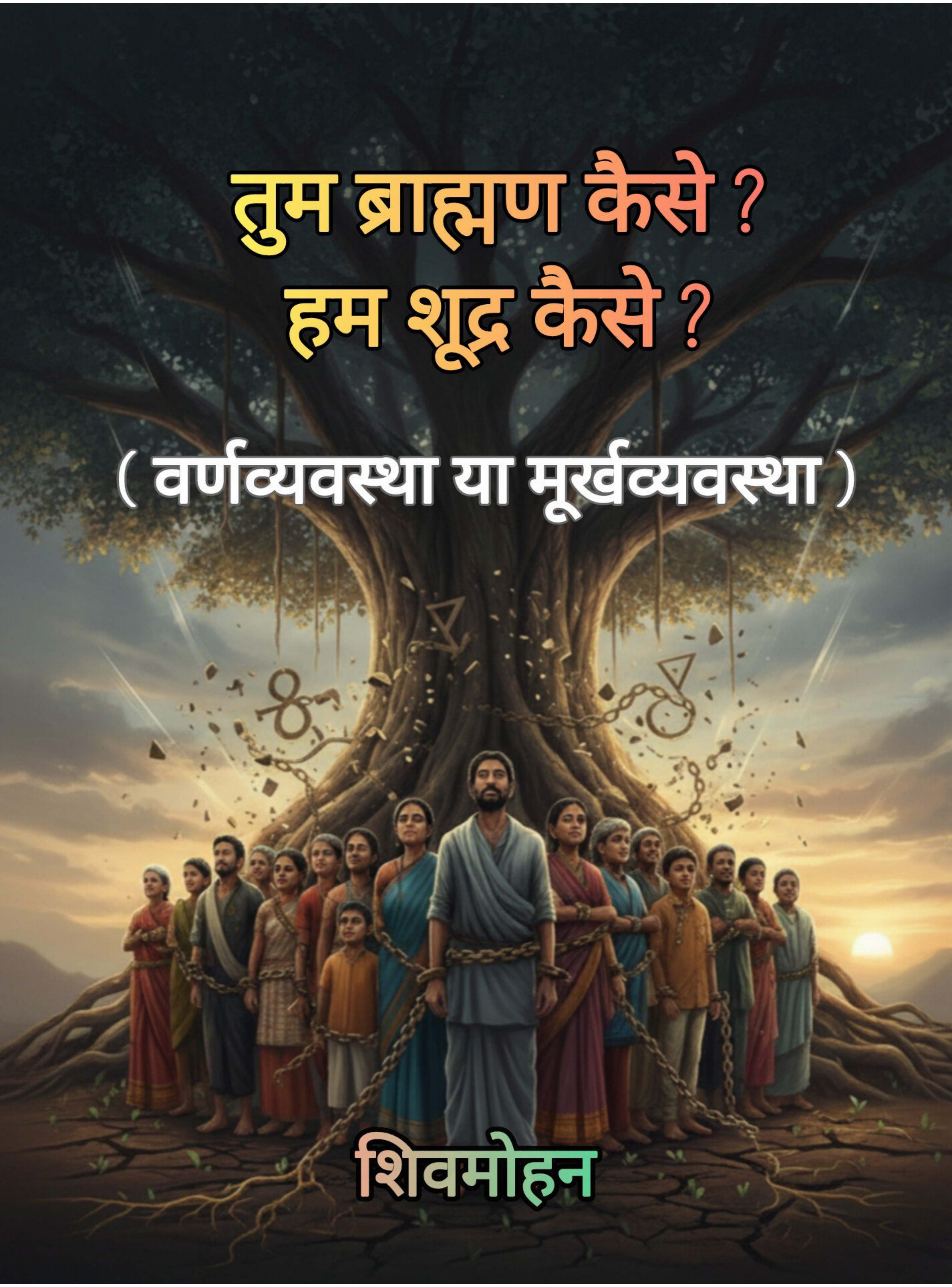
तुम ब्राह्मण कैसे ?
हम शूद्र कैसे ?

(वर्णव्यवस्था या मूर्खव्यवस्था)



शिवमोहन

" वर्णव्यवस्था या मूर्खव्यवस्था "

तुम ब्राह्मण कैसे ?

हम शूद्र कैसे ?

लेखक –

शिवमोहन

।। नम्र निवेदन ।।

यह लघु लेख एक ऐसे विषय पर है जिस पर दशकों से वाद-विवाद चला आ रहा है। कई समाज सुधारकों ने, मनीषियों ने, विद्वानों ने धर्मगुरुओं ने इस विषय पर अपने अपने विचारों को व्यक्त किया है। कोई जन्मगत वर्णव्यवस्था मानता है, तो कोई कर्मगत, तो कोई वर्णव्यवस्था मानने से ही इंकार करता है। कि वर्ण-व्यवस्था जैसा कोई सिद्धांत होना ही नहीं चाहिए।

कुछ तो कहते हैं कि हिन्दू धर्म में वर्णव्यवस्था पहले कर्म से थी, बाद में अंग्रेजो ने या कुछ ब्राह्मणों ने इसे जन्म से बना दिया है। लेकिन यह कहना उचित नहीं लगता है, क्योंकि महाभारत के केवल एक प्रसंग को पढ़ने से ही, जहां पर कर्ण से उसकी जाति पूछ कर उसका अपमान किया जाता है। यह बात असंगत हो जाती है। और पहले तो यह कहना चाहूंगा, कि हिन्दु धर्मग्रन्थ संस्कृत में लिखे है और आजकल ऐसे व्यक्ति संस्कृत के ग्रन्थों की व्याख्या कर रहे है। जिन्होंने कभी भी संस्कृत व्याकरण का अइउण भी नहीं पढ़ा होगा। जिस भाषा का व्याकरण हमको न आता हो, हम उस भाषा में लिखे ग्रन्थों की व्याख्या कैसे कर सकते हैं। और करेंगे तो अर्थ का अनर्थ ही होगा ।

क्योंकि हमारे विचार, हमारी भावना उस ग्रन्थ के प्रति या उस धर्म के प्रति जैसी होगी हम वैसा ही अर्थ करेंगे। अपने विचार के अनुरूप ही हम उस श्लोक को तोड़-मरोड़ कर घुमा फिराकर वहीं अर्थ करेंगे जो हमको अच्छा लगेगा। और इसी कारण आज आम जनमानस भ्रम में उलझा हुआ है, कि यह अर्थ सही है या वो अर्थ । अच्छा तो यह होगा कि जो ग्रन्थ जिस भाषा के है उस भाषा के अर्थ को उसी भाषा के विद्वानों से समझना चाहिए। और वह विद्वान परम्परा से प्राप्त अर्थ को भी जानता हो।

हिन्दुओं के सभी परम्पराप्राप्त आचार्यों में शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, रामानंदाचार्य की परम्परा सबसे प्राचीन मानी जाती है। अन्य आचार्यों की परम्परा भी प्राचीन मानी जाती है। मैंने इन्हीं परम्परा के वर्तमान आचार्यों तथा विद्वानों के ग्रन्थों को तथा उनके व्याख्यानों को प्रत्यक्ष या YouTube के माध्यम से पढ़ा तथा सुना है। कुछ आचार्यों, विद्वानों के वो ग्रन्थ नीचे लिखता हूं, जिसमें वर्ण-व्यवस्था का वर्णन बृहद या अंशतः प्राप्त होता है।

जैसे - स्वामी करपात्री जी महाराज के द्वारा लिखित ग्रन्थ भक्ति सुधा, चातुर्वर्ण्य विमर्श, रामायणमिमांसा ।

पुरी शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज के द्वारा लिखित ग्रन्थ- धर्म सिद्धि, धर्म मिमांसा, धर्म दर्शन।

स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज के द्वारा लिखित ग्रन्थ - भक्तिगीत सुधा।

गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित - धर्मशास्त्रांक, तत्वविवेचनी, ईशादि नौ उपनिषद ।

स्वामी श्री निग्रहाचार्य जी महाराज (श्री भागवतानंद गुरु) **के द्वारा लिखित ग्रन्थ - अमृत वचन, मूर्ख हृदय न चेत, शिष्य पाथेय, उत्तरकांड प्रसंग एवं सन्यासाधिकार विमर्श ।**

गौतम धर्मसूत्र (प्रमोद वर्धनः कौण्डिन्न्यायः), मनुस्मृति (पण्डित रामेश्वर भट्ट), याज्ञवल्क्य स्मृति (डा. गंगासागरराय, चौखम्भा), आपस्तम्ब धर्मसूत्र (डा. नरेन्द्र कुमार)

उपर्युक्त ग्रन्थों में वर्ण-व्यवस्था को जन्म से ही माना है। कर्म से नहीं। आर्यसमाज तथा अन्य व्यक्ति ऐसा भी मानते हैं, कि हिन्दू धर्मग्रंथ प्रक्षिप्त हैं, इनमें मिलावट की गई है। और वह मिलावट मैक्समूलर ने भारतीय शिक्षा को ध्वस्त करने के लिए की है। लेकिन, वर्तमान में हिन्दू धर्म के चारों शंकराचार्य, जगद्गुरु, विद्वान ऐसा नहीं मानते हैं। वो कहते हैं हमारे पास मैक्समूलर से भी प्राचीन पाण्डुलिपियां रखी हुईं हैं। जिनमें वहीं श्लोक हैं, जो आज के धर्मग्रंथों में हैं । अस्तु !

इसलिए जन्मगत वर्ण-व्यवस्था मानने से क्या क्या हानि हैं इस कौन कौन से प्रश्न हो सकते हैं। मुझे यह इतनी अवैज्ञानिक, अतार्किक क्यों लगती है। इस पर मैंने विचार करके कुछ प्रश्न किए तथा जन्मगत वर्ण-व्यवस्था के मानने वाले लोगों के द्वारा दिए गए तर्कों का भी यथामति निराकरण किया है। इस लेख की भाषा आम बोलचाल की भाषा है, सरल है, सहज है।

कृपया इस लेखक को पढ़कर अपने विचार हमारी ई-मेल आईडी पर अवश्य भेजें। धन्यवाद !

shivmohan27032001@gmail.com

।। विचारणीय विषय ।।

कोई बात ग्रन्थ में, शास्त्र में या किसी पुस्तक में लिखी है, इसलिए सत्य ही होगी ऐसा मानना उचित नहीं है। क्योंकि ग्रन्थों की कौन बात सत्य है या असत्य है या देश काल परिस्थिति के अनुसार कितनी सत्य है, यह तो तर्क करने से, समझने से, विचार करने से ही पता लगेगा । केवल धर्मग्रंथ में लिखा है, इसलिए सत्य है।

तो एक मुस्लिम व्यक्ति के लिए कुरान ही धर्मग्रंथ है, तो वह भी कहेगा कि हमारे कुरान में लिखा है तो सही ही लिखा है, तो यह कैसे निर्णय होगा कि किसकी बात सत्य है, किसकी बात असत्य है। किसके धर्मग्रंथ सत्य हैं, किसके धर्मग्रंथ असत्य हैं। यह तो तर्क करने से ही पता चलेगा, विचार करने से ही पता चलेगा। अगर कहो कि कहां तुम्हारी छोटी सी बुद्धि, तुम्हारी छोटी सी सोच और कहां ऋषियों की महान सोच, उनकी श्रेष्ठ बातें तुम नहीं समझोगे, तो ऋषियों की बातें श्रेष्ठ हैं या नहीं यह कैसे पता लगेगा। क्योंकि प्रत्येक धर्म का व्यक्ति यही कहता है कि हमारे पूर्वज श्रेष्ठ थे । उन्होंने जो कुछ लिखा है वो सत्य ही लिखा होगा ।

इसलिए हमारे ग्रंथ श्रेष्ठ हैं। और मजे कि, बात है कि उस व्यक्ति से पूछो कि तुमको कैसे पता तुम्हारे पूर्वज श्रेष्ठ थे या उनकी कही गई बातें सत्य है, तो ज्यादातर बोलेंगें कि ऐसा हमने सुना है, कुछ बोलेंगें कि हमने पढ़ा भी है और कुछ तो प्रश्न करने पर देशद्रोही घोषित कर दें, हो सकता है कि मारने पर भी आ जाएं। अस्तु !

और यह केवल हिन्दू धर्म में ही नहीं अपितु चाहे वो मुस्लिम धर्म (पंथ) हो या ईसाई पंथ हो या अन्य धार्मिक मत, पंथ, संप्रदाय हो सभी में अपने अपने धर्म के प्रति जो अन्धभक्ति भरी हुई है वह इसी प्रकार की है, बल्कि इससे ज्यादा ही है।

(इनकी अन्धभक्ति पर भी किसी लेख में बात करेंगें, पहले सफाई की शुरुआत अपने घर से होनी चाहिए)

अब जो केवल सोशल मीडिया से या तथाकथित लोगों से सुनकर कह रहे है कि हमारे ऋषि महान थे या उनकी बातें महान है, ऐसे लोगों को छोड़ो, क्योंकि सुनकर के बोलने वाले बहुत हैं, पढ़कर कहने वाले कम हैं।

" क्योंकि सुनना सरल है, पढ़ना थोड़ा कठिन है, पढ़कर के विचार करना उससे भी कठिन है और विचार करके उसको जीवन में उतारना तो सबसे कठिन है" ।

अब जो पढ़कर के बोलते हैं, उनसे पूछता हूं कि, शास्त्रों की बातें तर्क से सिद्ध नहीं होगी तो कैसे होगीं, क्योंकि कोई भी बात लिखी या बोली जाती है, तो उसका हेतु तो होता ही है बिना हेतु के बस ऐसे ही लिखी है तर्क मत करो ! यह तो उचित नहीं है, क्योंकि जब कोई बात लिखी गई होगी, तब भी तो तर्क किया गया होगा तो इसलिए शास्त्रों की बातें मारेंगे, नहीं ना। तो तुम भी तो पूछोगे कि क्यों, तो यही पूछना ही तो तर्क है उसी का समुचित उत्तर देना ही तर्क का निराकरण है।

और जो कहे कि नहीं हम तो शास्त्रों में लिखा है वही मानेंगे तर्क नहीं करेंगे तो, कल को कोई किसी ऐसे ग्रंथ को उठाकर दिखाए, जिसकी प्रति केवल उसी के पास हो तथा उसमें लिखा हो, कि इस दिन को पैरों से नहीं हाथ से चलना चाहिए तो केवल शास्त्रों की बात मानने वाला व्यक्ति कहेगा हां ठीक है, अब में हाथ से चलूंगा। क्योंकि अगर तुमने तर्क कर दिया, तो फिर तुम भी धर्मग्रथों पर प्रश्न करने लगे। और जब धर्म ग्रंथो का विचार तर्क से नहीं करना है तो तुमको कैसे पता कि, यही तुम्हारे धर्म ग्रंथ हैं, अगर कहो कि हमारे गुरु ने बताया है |

तो तुम्हारे गुरु को किसने बताया, उनको जिसने बताया, उनको किसने बताया तो कहीं तो इसकी एक सीमा होगी ना, कि यह ग्रंथ इसलिए इतना प्रमाणिक है, इसलिए श्रेष्ठ है, क्योंकि इसमें यह बातें ऐसे ऐसे लिखी हैं।

जैसे- बहुत से शास्त्रों में धर्मग्रंथों में बहुत सी बातें उच्च कोटि की हैं, तर्क पर एकदम खरी उतरती हैं, चाहे वह ऋषि महीदास कृत ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लिखित सृष्टि प्रक्रिया हो या उपनिषदों में आध्यात्मिक विकास के लिए दिए गए सिद्धांत हो गए या विभिन्न धर्मग्रंथों में खानपान संबधी विचार हो गए इत्यादि । जैसे- मांस खाना पर्यावरण के लिए तथा शरीर के लिए दोनों के लिए हानिकारक है और इसका निषेध भी हमारे धर्मग्रंथो में हैं।

लेकिन, अगर मनुस्मृति के 5 वें अध्याय के 10 वें श्लोक से लेकर 56 वें श्लोक तक मांस की महिमा का गुणगान होगा, तो पूछा जाएगा ना कि यह क्यों ? क्योंकि मनुस्मृति में कहा गया है कि, मांस खाना मनुष्यों का स्वाभाव है, तो यह पूछा जाएगा ना यह कैसे? तर्क ही नहीं करना विचार ही नहीं करना, तो फिर कुरान या बाइबल का खंडन किस प्रकार करोगे कैसे बताओगे कि वेदादि ग्रंथ कुरान, बाइबल से श्रेष्ठ हैं, क्योंकि तुम अपने धर्म ग्रंथो की लिखी बातों पर प्रश्न नहीं कर सकते, तर्क नहीं कर सकते ।

तो, फिर तुम तुम कहोगे हमारे ग्रंथ महान, मुस्लिम कहेगा कुरान महान और ईसाई कहेगा बाइबल महान | तो मुस्लिम जब कहे कि हमारे कुरान में लिखा है, कि स्त्रियां पुरुषों की खेती हैं, काफिरों को मार दो, आदम की रीड़ की हड्डी से हउआ (स्त्री) का बनना, सात दिन में सृष्टि का निर्माण, हलाला, ईद, बकरीद पर कुर्बानी, धरती चपटी है, सातवें आसमान पर अल्लाह रहता है इत्यादि । यह सब बातें भी सही ही है। तो अब तुम इनका खंडन कैसे करोगे और अगर उनके ग्रन्थों का खंडन तर्क से करोगे तो अपने ग्रन्थों का भी शोधन तुमको तर्क से करना पड़ेगा।

(कई लोगों से अर्थात धर्म के जानने वालों से जब हमने उपर्युक्त प्रश्न किए, तब वह यह कहते हैं.. कृपालु जी ने भी अपने ग्रन्थ " प्रेम रस सिद्धांत " में भगवान हैं या नहीं इस पर प्रश्न करने पर यही तर्क दिया है, माधवाचार्य जी ने भी अपने " क्यों " नामक ग्रन्थ में)

वो कहते हैं कि, तुम्हारा पिता कौन है, यह तुम कैसे सिद्ध करोगे क्या तुम इसमें भी तर्क करोगे । जैसे – तुमने माता की बात पर विश्वास करके अपने पिता को माना है वैसे ही हम धर्मग्रंथो की बातें अपने गुरु की बातों पर विश्वास करके मानते हैं।

(मेरा उत्तर..)

यह बात कुछ हद तक ठीक है क्योंकि विश्वास नहीं करोगे तो समाज में व्यवहार नहीं चलेगा। विश्वास जरूरी है मानता हूं ! लेकिन कौन सी बात, किसकी बात विश्वास योग्य है या नहीं इसका भी तो विचार करना पड़ेगा। जिन गुरु की बातों पर विश्वास करके तुम ग्रन्थों की बातों को सत्य मान रहे हो, उन गुरुजी से पूछो कि, गुरु जी आपको कैसे पता कि ग्रन्थों की बातें सत्य है केवल कह देने से सत्य तो नहीं हो जाती हैं।

तब तो मुस्लिम व्यक्ति भी कहेगा कि हमारे मौलवी साहब ने कहा है कि, कुरान में लिखी हुई बातें सत्य है। तो अब तुममें और उस व्यक्ति में क्या अंतर है कुछ नहीं। तो विश्वास करने के साथ साथ थोड़ा विवेक भी हो तो अच्छा है। जैसे- बचपन में माता जी के द्वारा कही गई बहुत सी बातें विचार करने पर गलत भी होती हैं और सही भी होती हैं।

बचपन में मेरी माता जी मुझको दूध के साथ हल्का नमक खिला देती थी। क्योंकि मुझे मीठी चीज के साथ दूध पीना कम पसन्द था और मैं खा भी लेता था, क्योंकि उस समय बचपन था विचार करने की या सोचने की शक्ति नहीं थी, लेकिन जब बड़ा हुआ पता लगा कि दूध और नमक एक दूसरे के विरुद्ध आहार हैं, क्योंकि दूध में लैक्टोज नामक केमिकल और नमक में सोडियम होता है,

जिससे दोनों में रिएक्शन होता है, जिससे स्किन एलर्जी का खतरा होता है, सफेद दाग भी होने का खतरा है। यह बात अष्टांग हृदय जो वाग्भट्ट जी का आयुर्वेदिक ग्रंथ है, उसमें भी बताया गया है तथा इस पर कई शोध भी हुए हैं।

दूसरा बचपन में बीमार होने पर या प्रेत बाधा समझकर पीर बाबा, जाहरवीर बाबा इत्यादि स्थानों पर मेरी माता जी पूजा करती थी, मन्नत मांगती थी, कि मैं ठीक हो जाऊं और यह करने से कभी-कभी तो मैं संयोग से ठीक भी हो जाता था, तो उपर्युक्त दोनों बातें विचार करने पर अतार्किक तथा निरर्थक थी। लेकिन बहुत सी बातें जो माताजी ने बताई थी वह सत्य भी थीं, जैसे भगवान की पूजा करना, अपने से बड़ों के पैर छूना, जीवों पर दया करना और भी कई बातें।

अब आते हैं पिता वाले तर्क पर कि, माताजी ने कहा यह पिता है तो मान लेते हो ना, बिल्कुल जब बचपन में माताजी ने कहा था तो केवल माना था जैसे और बातें मानी थी लेकिन बड़ा हुआ बुद्धि विकसित हुई तो विचार किया की जन्म लेने में माता-पिता हेतु होते हैं, बिना माता-पिता के किसी का जन्म ही नहीं हो सकता है, तो हमारे जन्म के हेतु भी माता-पिता होंगे।

दूसरी बात माता किसी दूसरे व्यक्ति को पिता जैसा महत्वपूर्ण पद क्यों देगी, जो व्यक्ति वास्तव में बच्चे के जन्म का हेतु होगा उसी को तो अपने बच्चे का पिता बताएंगी ! और जिस परंपरा से या जिस सिद्धांत पर विश्वास करने से कई लोगों की जिंदगी बर्बाद हो जाए या जानवरों के जैसा उनके साथ व्यवहार किया जाए तो उस परंपरा का, उस सिद्धांत का शोधन अति आवश्यक है। और जो तर्क आप मेरे प्रश्न करने पर दे रहें हैं वही तर्क अगर कोई मुस्लिम व्यक्ति कुरान पर प्रश्न करने पर दे तो आप क्या कहेंगे? वैसे भी इस तर्क की संगति, मेरे प्रश्न से नहीं बैठती है..

अब आते हैं, जन्मगत वर्णव्यवस्था पर -

प्रश्न- 1. कोई कहे कि मैं ब्राह्मण हूं, तो मैं पूछता हूं तुमको कैसे पता कि तुम ब्राह्मण हो, अगर कहो कि हमारे पिता ब्राह्मण है, तो तुम्हारे पिता को कैसे पता कि हम ब्राह्मण हैं, पिता कहे कि हमारे पिता ब्राह्मण थे तो उनको कैसे पता ?

कहने का तात्पर्य कि, पिता के कहने मात्र से अपने आप को ब्राह्मण मानने लगे हो, तो कल को कोई शूद्र वर्ण का व्यक्ति भी कहेगा कि, हमारे पिता ने कहा है कि तुम ब्राह्मण हो तो हम भी ब्राह्मण हुए उसके पिता से पूछो, वह कहेंगे हमारे पिता ने कहा था। तो ऐसे कोई भी व्यक्ति अपनी संतान को ब्राह्मण, क्षत्रिय इत्यादि बना सकता है। और जो कहो कि, समाज कह दे, तो वही ब्राह्मण होगा या वही क्षत्रिय होगा या वैश्य होगा शूद्र होगा। तो कल को जिसके पास जनबल हो तो वह ब्राह्मण बन जाएगा या जिसके पास जनबल नहीं है, जिससे समाज नफरत करता हो, तो समाज उसको शूद्र बना देगा।

जो कहो कि गोत्र इत्यादि का भी ज्ञान होना चाहिए, तो वह भी अपना कोई भी गोत्र बता सकता है। वर्तमान में 80% ब्राह्मणों को अपना गोत्र इत्यादि कुछ नहीं पता तो क्या आप उनको ब्राह्मण नहीं मानोगे।

प्रश्न 2. सृष्टि के प्रारंभ में व्यक्ति का वर्ण किस प्रकार तय हुआ था, क्योंकि अगर परंपरागत (पिता के कहने से) वर्ण मानोगे तो प्रारंभ में किस प्रकार वर्ण मिला होगा, जो कहो कि पूर्व जन्म के आधार पर, तो उससे पूर्व जन्म में किस आधार पर मिला था तथा फिर उसके पूर्व जन्म में किस आधार पर मिला। अर्थात सृष्टि के प्रारंभ में सृष्टि की जब रचना हुई तो सबसे पहले जन्मा व्यक्ति किस वर्ण में आएगा, यह कैसे निर्णय हुआ। क्योंकि जन्मगत तो निर्णय हो ही नहीं सकता!

प्रश्न 3. माना कि, पिता तो तप, ज्ञान, संयम, सदाचार इत्यादि ब्राह्मण के कर्मों से संपन्न हैं, लेकिन उनका पुत्र नीच कर्म करता है, जुआ, शराब, मांस का सेवन करता है तथा दूसरी तरफ शूद्र का पुत्र जुआ, शराब, मांस को हाथ तक नहीं लगाता ज्ञानार्जन भी करता है तथा अन्य दुर्गुणों से मुक्त है, तो एक दुर्गुणों से युक्त ब्राह्मण का पुत्र तथा एक दुर्गुणों से मुक्त शूद्र का पुत्र (हमारे ही गांव में कई लोग ऐसे हैं) इन दोनों में अगर प्रधानता तय करनी हो, इन दोनों में प्रथम सम्मान का अधिकारी तय करना हो, तो कौन होगा ।

इन दोनों में से किसी एक के हाथ का अगर आपको बना हुआ भोजन करना हो तो आप किसके हाथ का करेंगे | अगर कहो कि वह ब्राह्मण का पुत्र जो दुर्गुणों से युक्त है, वह श्रेष्ठ ब्राह्मण तो नहीं है, नाम मात्र का ब्राह्मण है तो मैं कहता हूं कि नाम मात्र का ब्राह्मण क्यों मानना इससे क्या लाभ है।

क्योंकि नाम मात्र का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य मानने से ही वर्तमान में हिंदू धर्म का कितना नुकसान हुआ है यह तो पता ही होगा। क्योंकि ब्राह्मण का पुत्र यह तो जानता ही है कि हम चाहे कुछ भी कर ले हमको सम्मान मिलना ही है, हम ब्राह्मण के ब्राह्मण रहेंगे और ब्राह्मण होना अर्थात जो हमसे छोटी जाति का है वह हमारा सम्मान करेगा और वह हमारे नीचे ही रहेंगे। इसी कारण लाखों लोगों ने हिंदू धर्म को छोड़ा है, क्योंकि उन्होंने सोचा कि हम चाहे कितने भी अच्छे कर्म कर लें, रहेंगे शूद्र ही, रहेंगे नीच जाति के ही, हमको हीन भावना से ही देखा जाता है इससे अच्छा है कि हम दूसरे धर्म में चले जाएं। (वो बात अलग है कि उनको सम्मान वहां भी नहीं मिलता है, क्योंकि जात- पात तो हर धर्म में है)

और अगर कहो कि यह तो उनके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है इसलिए ब्राह्मण का पुत्र तो ब्राह्मण ही होगा भले ही वह नीच कर्म करता हो और अच्छे कर्म करने वाला शूद्र का पुत्र तो शूद्र ही होगा।

तो जब पूर्व जन्म के कर्मों को देखकर ही किसी व्यक्ति का मान सम्मान, आदर सत्कार करना है, छोटी जाति का बड़ा जाति बताकर भेद करना है, तो फिर कोई व्यक्ति किसी कष्ट में हैं, बीमार है, तो उसकी सेवा भी मत करो । माता-पिता बीमार है, तो उनकी भी सेवा मत करो । किसी के यहां चोरी हो गई, किसी का बलात्कार हो गया, हत्या इत्यादि कोई दुष्कर्म हो गया, तो हत्या करने वाले को छोड़ दो, बलात्कार करने वाले को छोड़ दो जिसका बलात्कार हुआ है, चोरी हुई है उससे कहो कि यह सब तुम्हारे पूर्व जन्मों का फल है । और तो और फिर तो कोई गौशाला खोलने की भी आवश्यकता नहीं है।

क्योंकि हो सकता है कि अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फल स्वरूप गौमाता आज इस दशा में पहुंची हो। तो जब सब पूर्व जन्म के कर्मों से ही होगा पूर्व जन्म के कर्मों को देखकर ही तुम किसी का निर्णय करोगे तो, फिर यह सब बंद करना पड़ेगा और कहां पर पूर्व जन्म होगा कहां नहीं होगा अर्थात जब बात जन्म जाति वर्ण की होगी तो पूर्व जन्म का फल होगा तथा जब किसी की हत्या होगी इत्यादि घटनाएं होगी तो पूर्व जन्म नहीं होगा यह किस आधार पर तय हुआ है, इसका भी कोई तर्क नहीं है।

प्रश्न– 4. अगर कहो की पशु भी जन्म से होता है, जैसे– घोड़ा जन्म से घोड़ा होता है, गाय जन्म से गाय होती है, शेर जन्म से शेर होता है इत्यादि। इसलिए ब्राह्मण आदि वर्ण भी तो जन्म से ही होंगे। (पुरी वाले शंकराचार्य जी स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी यह तर्क देते हैं)

यह तर्क तो एकदम निराधार है, क्योंकि पशुओं के नाम, जाति शरीर की आकृति के हिसाब से होते हैं। जैसे– घोड़े जैसे आकृति शरीर वाला पशु घोड़ा होता है, गाय जैसी आकृति शरीर वाला पशु गाय होता है, शेर के समान आकृति वाला शेर होता है लेकिन जब तुम ब्राह्मण आदि वर्णों का जन्म से भेद करते हो तो यहां यह समस्या है, कि जिसको तुम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र मान रहे हो उनका शरीर तो एक जैसा ही है।

क्या ब्राह्मण का शरीर शूद्र के शरीर से अलग होता है या रंग अलग होता है या सोचने समझने की शक्ति अलग होती है या बुद्धि का विकास अलग होता है अलग क्या होता है कुछ नहीं। जो गुण परिवेश के हिसाब से जन्म से ब्राह्मण में होंगे वही गुण परिवेश के हिसाब से शूद्र में होंगे, तो जैसे एक जैसे घोड़े की आकृति शरीर वाले को घोड़ा कहते हो, उसी प्रकार गाय की आकृति शरीर वाले को गाय कहते हो, तो उसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र का शरीर आकृति तो एक ही है तो भेद क्यों करते हो सभी को एक ही संज्ञा क्यों नहीं देते हो। और उनमें भेद होता भी है तो, गुणों के आधार पर होता है। जैसे - कोई घोड़ा तेज दौड़ता है, तो उसका भेद अलग हो जाता है कोई गाय ज्यादा दूध देती है तो वह अलग हो जाती है।

इसलिए देसी गाय, अमेरिकन गाय, जर्सी गाय, तो यह भेद गुणों के आधार पर है (कुछ लक्षण शरीर पर भी दिखते हैं) तो मनुष्यों में भी भेद गुणों के आधार पर होना चाहिए। हम यह तो नहीं करते हैं, कि गाय के एक जैसे आकृति शरीर वाले को हम एक को घोड़ा कहते हैं एक को गाय कहते हैं या एक को भैंसा कहते हैं एक को गधा कहते हैं। भैंस और गाय के गुण एक हैं लेकिन शरीरगत आकृति भेद होने से नाम भी अलग हैं।

शरीर की आकृति से भेद हो तो सही है, जैसे पुरुष और स्त्री के शरीर में भेद है तो पुरुष स्त्री का भेद करना सही है। या फिर ऐसा होता कि ब्राह्मण के यहां जन्मे व्यक्ति के अंदर स्वाभाविक तप करने की इच्छा होती या ज्ञान अर्जन करने की जिज्ञासा होती या जन्म से ही सदाचारी संयमी होता लेकिन ऐसा तो नहीं है, ना ही शूद्र में ऐसा है। क्या उसमें तप करने की शक्ति नहीं होती, क्या वह पढ़ता है तो भूल जाता है, ऐसा तो नहीं है ना, तो फिर भेद क्यों करना।

(नीचे लिखा तर्क पुरी शंकराचार्य देते हैं)

तर्क - अगर कहो कि अपनी बहन, माता से भी तो रमण कर सकते हो, तो कर लो । क्योंकि तुम कहते हो, कि शूद्र पढ़ सकता है तो पढ़ने दो, तप, ध्यान कर सकता है तो तप, ध्यान करने दो ।

मेरा उत्तर..

यह तर्क भी कुतर्क ही है, क्योंकि रमण का फल है संतान उत्त्पत्ति । अब अगर बहन से रमण करोगे, तो सभी तरह के रिश्ते ही खत्म हो जाएंगे जैसे- बहन का रिश्ता, भाई का रिश्ता, मां का रिश्ता, पिता का रिश्ता, साले का रिश्ता, जेठ, देवर का रिश्ता इत्यादि । और अगर रिश्ते ही नहीं बचेंगे तो फिर जानवरों में और मनुष्यों में क्या फर्क होगा और जिसको हम जन्म से जानते हैं, जन्म से साथ रख रहे हैं उसके प्रति तो हम ऐसी भावना नहीं रख सकते हैं।

दूसरी बात रमण तो तब होगा ना जब विवाह होगा, और विवाह हमेशा परिवार, गांव, रिश्तेदारों अलग होना चाहिए क्योंकि विवाह जब इनसे अलग होगा दूर होगा तो हमारी जान पहचान, हमारा व्यवहार, हमारी सोचने समझने की शक्ति, संस्कृति इन सबका भी विकास होगा ।

परिवार में शादी करने से या गांव या रिश्तेदारों में शादी करने से हम उन्हीं गिने चुने लोगों के आसपास चक्कर काटते रहेंगे तथा कूपमण्डूक बनकर रह जाएंगे।

और ऐसे कुतर्क जब कोई धर्मगुरु देने लगता है तो इसका अर्थ है, कि वह अपनी बात सिद्ध करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।

दूसरी बात DNA एक होने से संतान ही नहीं होगी क्योंकि दोनों समगोत्रीय होंगे। अब अगर कहो कि समगोत्रीय में शादी नहीं करना चाहिए यह भी तो हमारे ग्रंथों में लिखा है तो जन्म से वर्ण व्यवस्था भी हमारे ग्रंथों में लिखी है, तो वह भी मानो।

बिल्कुल ग्रंथों में समगोत्रीय से शादी करना मना है, हम मानते है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है की एक बात सही है, तो सब सही ही होगी या कुछ बातें तर्क पर खरी उतरती है तो सारी बातें तार्किक ही होगीं। ऐसे तो कुरान या बाइबिल में भी बहुत सी बातें सही हैं तो क्या हम पूरी कुरान को या पूरी बाइबिल को सही मान लें, तार्किक मान लें। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमारे धर्म ग्रंथों में सब गलत ही है, अतार्किक ही है। केवल ग्रंथ में लिखी है इसलिए वह बात सही ही होगी क्या? वैसे तो हमारे ग्रंथों में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो उच्च कोटि की है अविश्वसनीय हैं, अकल्पनीय है और तो और अगर जीवन में समाज में वो बातें उतारी जाए तो उन्नति ही होगी भौतिक भी, आध्यात्मिक भी ।

जैसे- वैदिक सृष्टि प्रक्रिया, अहिंसा का सिद्धांत, यम, नियम, संयम इत्यादि अष्टांग योग, पारिवारिक व्व्स्थीकरण, प्रकृति का भोग नहीं उपयोग करना इत्यादि हजारों बातें।

और कुछ बातें ऐसी भी हैं कि तर्क से परे होती हैं हमारी आज के सोच के हिसाब से तार्किक नहीं लगती हैं, जिसको हम आधुनिक भाषा में Meta physics कहते हैं। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि सभी बातों को बस लिखी है यह मानकर विश्वास कर लें क्योंकि बहुत सी बातें अतार्किक लगती हैं, वर्तमान समय में निरर्थक हैं। लेकिन अभी केवल वर्ण व्यवस्था से संबंधित एक दो बातें जो एकदम अतार्किक हैं उनको लिखता हूं-

मनुस्मृति के 9 वें अध्याय के 317 तथा 319 श्लोक देखें । लिखा है अविद्वान ब्राह्मण भी देवता रूप है, ब्राह्मण भले ही निंदित कार्य करे, तो भी पूज्यनीय है। याज्ञवल्क्य स्मृति, गौतम धर्म सूत्र इत्यादि में वेदों का उच्चारण करने पर या सुनने पर कान में सीसा पिघला कर डाल देना, जीव काट देना, मुख में कोयला भर देना इत्यादि बातें लिखी हैं, यह बातें मनुस्मृति में भी लिखी हैं। मनुस्मृति में ही लिखा है कि, यदि ब्राह्मण के बराबर आसन पर शूद्र बैठ जाए तो, शूद्र के पीछे का हिस्सा ही काट देना चाहिए। शूद्र यदि ब्राह्मण पर जिस अंग से प्रहार करें तो उस अंग को ही काट देना चाहिए।

उपर्युक्त बातें क्या अतार्किक, स्वार्थ पूर्ण, दूसरे के प्रति हीन भावना को नहीं दर्शाती हैं। हां, यदि उपर्युक्त बातें मिलावटी हैं, मूल ग्रंथ की ना हो तब तो ठीक है, लेकिन वर्तमान में कोई भी धर्माचार्य, शंकराचार्य, जगद्गुरु, इस बात को भी नहीं नहीं मानते हैं और कहते हैं, कि दंड व्यवस्था को बनाने के लिए ऐसे कठोर नियम बनाए गए हैं, यानी व्यवस्था भी तुम बनाओ फिर शरिया कानून के जैसे दंड भी तुम्हारा बनाओ, मरे कोई और |

कल को भारत सरकार नियम बना दे, कि कोई भी ब्राह्मण अमुक स्थान पर जाएगा या शिक्षा लेने स्कूल में जाएगा या अमुक अमुक पुस्तक पढ़ेगा तो उसके पैर काट दिए जाएंगे, मुंह में कोयला भर दिया जाएगा। तब तो तुरंत विरोध करने लगोगे, क्या तब नहीं पूछोगे यह नियम क्यों, किस आधार पर बनाया है।

अभी कुछ साल पहले जो, हर्जंन (दलित) एक्ट आया था, कि चमार को यदि चमार कह दिया तो जेल हो जाएगी, तब तो कई धर्माचार्यों ने, कथावाचकों ने इसका विरोध किया था। तो वह विरोध भी नहीं करना चाहिए। केवल मान लेते क्यों नहीं माना। यह कुछ दंड तो ग्रंथों में लिखे हुए हैं, जो अभी देखने को नहीं मिलते हैं। लेकिन बहुत से दंड या छूत अछूत जो धर्मग्रंथों में वर्णित हैं वह आज भी देखने को मिलते हैं। लोक व्यवहार में नीच जाति के लोगों के साथ क्या- क्या होता है यह सभी को भली भांति पता ही होगा।

कुछ बता ही देता हूं, जैसे जुआ खेलने वाला, शराब पीने वाला गुटका खाने वाला, परस्त्रियों में रुचि रखने वाला, ज्ञानहीन व्यक्ति जब खुद को ब्राह्मण बताकर एक शूद्र वर्ण का व्यक्ति जिसका आचरण सभ्य है, पढ़ा हुआ है दुर्व्यसनों से मुक्त है उसको अपने साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन भी नहीं करने देता है, पढ़ाई भी नहीं करने देता है और और तो और एक घड़े से पानी भी नहीं पीने देता है |

तो, फिर यह सब देखकर वह शूद्र वर्ण का व्यक्ति तो पूछेगा ही कि तुम ब्राह्मण कैसे हम शूद्र कैसे और यह सब देखकर ही जब आरक्षण दिया जाता है तो फिर विरोध करते हैं। वह बात अलग है कि वर्तमान समय में आरक्षण एक बोट बैंक बन गया है।

प्रश्न 5. अगर कहो, कि जन्मगत वर्ण-व्यवस्था, समाज में व्यवस्था बनाने के लिए है। जिससे जन्म से कार्य यदि निर्धारित होगा तो अव्यवस्था नहीं फैलेगी।

यह भी मजबूत तर्क नहीं है, क्योंकि इसकी संभावना बहुत कम है कि ब्राह्मण के कर्मों से युक्त ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण के कर्म ही करेगा।

इसी प्रकार क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के बारे में समझना चाहिए या पिता यदि बुद्धिमान है, उसको ज्ञान देने में रुचि है, विद्वान है। उसके पुत्र को पढ़ने में ज्ञान देने में कोई रुचि नहीं है।

इसी तरह क्षत्रिय वर्ण की संतान शरीर से कमजोर हो, बलहीन हो, कुशल नेतृत्व नहीं कर पाता है, राजनीतिज्ञ नहीं हो वैश्य का संतान व्यापार वाणिज्य में कुशल नहीं हो, शूद्र का पुत्र सेवा भावी ना हो, तो जिसकी संभावना कम हो उससे अव्यवस्था ही होगी। अगर कहो कि यह राजा का धर्म होता था, कि सभी को वर्णों के हिसाब से कर्मों में व्यक्ति को लगाए, दंडित करें।

लेकिन, यह तो बलात (जबरदस्ती) वाला काम हुआ जिस व्यक्ति की प्रतिभा किसी और क्षेत्र में प्रशंसनीय होती उसको बलात किसी दुसरे कर्म में लगाकर, उसको न यहां का छोड़ा न वहां का, जिसकी प्रतिभा जिस और हो उसी और लगाना चाहिए जिससे उस क्षेत्र की उन्नति भी होगी। जैसा कि हम वर्तमान में देख भी रहे हैं, कि ब्राह्मण का पुत्र सेना में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है, क्षत्रिय व्यापार या शिक्षा में उन्नति कर रहा है वह वैश्य व्यापार नहीं चला पा रहा है। लेकिन अन्य क्षेत्रों में उन्नति कर रहा है शूद्र व्यापार तथा शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, तो जन्म से ही अगर कर्म निर्धारित होता, तो ब्राह्मण किसी शूद्र के यहां नौकरी नहीं कर रहा होता, शूद्र अध्ययन ही ना कर पाता, अध्ययन करने की बुद्धि ही ना होती उसमें।

और अगर कहो कि ब्राह्मण के पुत्र को वह परिवेश नहीं मिला वह ज्ञान वाला माहौल नहीं मिला, क्योंकि उसके पिता ऐसे ही थे तो जब परिवेश की माहौल की ही बात है तो जन्मगत थोपने से क्या लाभ है। सभी वर्णों की सन्तानों को एक जैसा परिवेश दो, बराबर का अधिकार दो फिर देखो। दूसरी बात व्यवस्था ही केवल बनानी है, तो भेद क्यों हो, उसको हीन दृष्टि से फिर क्यों देखा जाता है, शिक्षा से वंचित कर देना, खाने-पीने में भेद करना साथ में उठने बैठने में भेद करना ऐसा क्यों?

प्रश्न 6. अगर कहो, कि किसी वस्तु का जन्म पहले होता है या उसका अधिकार अर्थात पहले कोई वस्तु बना देते हो तब सोचते हो कि इसका क्या उपयोग करना है या बनाने से पहले ही मस्तिष्क में सोच लेते हो कि इसका क्या उपयोग करना है।

यही कहेंगे कि हां, हम यह निर्णय मस्तिष्क में पहले ही कर लेते हैं की वस्तु का कार्य क्या होगा, इसका क्या उपयोग होगा। जैसे कोई लोटा है या घड़ा है तो उसके बनने के बाद तुमने सोचा कि इसका क्या उपयोग करना है या बनने के पहले तो बनने के पहले ही तो सोचोगे। इसी प्रकार व्यक्ति के जन्म से पहले उसके कर्म तय हो जाते हैं, कि अमुक कुल में, घर में, वर्ण में यदि किसी का जन्म होगा तो उसका यह कर्म होगा।। (पुरी शंकराचार्य यह तर्क देते हैं)

अब इस तर्क का निराकरण समझो आपने कहा कि लोटे या घड़े के जन्म से पूर्व उसका कार्य तय होता है, बिल्कुल!

लेकिन, क्या आप एक जैसे 10 घड़े में अलग-अलग कार्य का भेद करोगे। जैसे 10 मिट्टी के एक जैसे घड़े आपके सामने रखे हैं, तो अगर आप एक घड़े को उठाकर फेंक देंगे, एक घड़े में मदिरा भर देंगे, एक घड़े में दूध भरकर रख देंगे, एक पर स्वर्ण की परत चढ़ाकर मंदिर में रख देंगे इत्यादि कार्य करेंगे। तो एक जैसी आकृति का, एक जैसी मिट्टी, एक जैसा कार्य करने की क्षमता वाले वो घड़े, आपसे यह नहीं पूछेंगे कि आपने मेरे साथ यह भेद क्यों किया, मदिरा वाला घड़ा पूछेगा कि, हमारे अन्दर मदिरा क्यों भरी, उसके अन्दर दूध क्यों भरा, उस पर सोना क्यों चढ़ाया। तब क्या कहोगे? इसी प्रकार जब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के एक जैसे शरीर, आकृति, बुद्धि होने पर तुम किसी के साथ मदिरा वाला व्यवहार करोगे, किसी के साथ दूध वाला व्यवहार करोगे, किसी के साथ स्वर्ण वाला, तो फिर प्रश्न तो उठेगा ही, यह भेद क्यों?

प्रश्न - 7. जन्मगत वर्ण व्यवस्था मानने वाले एक तर्क और देते हैं, कि जैसे तुम अगर चौराहे पर जाकर के खड़े हो जाओ और ट्रैफिक संचालन करने लगो, तो सामने वाला तुमको मूर्ख ही समझेगा, लेकिन वहीं अगर ट्रैफिक पुलिस वाला आकर ट्रैफिक संचालन करें तो कोई समस्या नहीं, कोई उसको मूर्ख नहीं बताएगा, क्योंकि उसमें वह अधिकृत है और उसका वह अधिकार है,

तो इसलिए जिसका जिसमें अधिकार है वही कर्म करे तब ही सही है। ब्राह्मण के अधिकार क्षेत्र में क्षत्रिय आएगा, क्षत्रिय के अधिकार क्षेत्र में वैश्य आएगा या वैश्य के अधिकार क्षेत्र में शूद्र या शूद्र ब्राह्मण के अधिकार क्षेत्र में जाएगा तो समस्या ही होगी। (पुरी शंकराचार्य यह तर्क देते हैं)

अब इस तर्क का भी निराकरण समझो। लगता है यह तर्क बिना विचार करे कह दिया गया है। वैसे तो पिछले प्रश्नों को पढ़कर यह तर्क निरस्त हो ही जाता है, फिर भी कुछ विशेष बताता हूं क्या ट्रैफिक पुलिस वाला जन्म से ही ट्रैफिक पुलिस था, नहीं ना। वो एक परीक्षा देकर ट्रैफिक के नियमों को पढ़कर ट्रैफिक पुलिस बनता है, इसलिए वह उसमें अधिकृत है। कल को वह व्यक्ति भी, जिसको लोग मूर्ख समझ रहे थे, वह परीक्षा देकर ट्रैफिक पुलिस बन सकता है। तो यहां जन्म से नहीं, गुणों के आधार पर वह अधिकृत है, उसको अधिकार है।

अगर ब्राह्मण के कर्मों से युक्त व्यक्ति ब्राह्मण हो, क्षत्रिय कर्मों से युक्त व्यक्ति क्षत्रिय हो, इसी प्रकार वैश्य, शूद्र भी। तो फिर ब्राह्मण या क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र मानने में कोई आपत्ति नहीं होगी। इसी प्रकार एक पुलिस अधिकारी को पुरस्कृत या दंडित इसलिए किया जाता है कि, वह अपनी इच्छा से पुलिस अधिकारी बना तथा अपनी योग्यता के बल पर उसने पुरस्कार पाया फिर यदि कभी वह अपना कर्म करने में आलस्य करे तब दंड भी मिलता है, लेकिन वर्ण व्यवस्था में तो ऐसा नहीं है तुम्हारी योग्यता है या नहीं तुम्हारा मन वह कर्म करने में है या नहीं, केवल जबरदस्ती पैदा होने से पहले ही कर्म थोप दिया गया कि इस कुल में इस घर में, इस वर्ण में जो जन्म लेगा वह यह निश्चित कर्म करेगा। न करने पर उसको दंड भी मिलेगा, तो यह किसी पर बलात अधिकार थोपना है ना कि अधिकार देना।

प्रश्न 8. कर्म से वर्ण व्यवस्था मानने पर केवल एक ही दोष है कि व्यक्ति कभी ब्राह्मण का कर्म करेगा, तो कभी क्षत्रिय का कभी शूद्र का। इससे आज अगर वह ब्राह्मण है तो कल क्षत्रिय बन जाएगा, फिर वैश्य या शूद्र बन जाएगा यानी हर दिन उसका वर्ण बदलता रहेगा |

लेकिन जन्मगत वर्ण व्यवस्था मानने पर अनेक विसंगतियां हैं, कर्मगत मानने पर कम। कर्म देखकर यदि व्यक्ति के साथ अच्छा या बुरा व्यवहार होगा तो, व्यक्ति को भी भय भी रहेगा कि हम निंदित कर्म नहीं करेंगे (असभ्य आचरण नहीं करेंगे, नियम संयम से रहेंगे, शराब मांस इत्यादि का सेवन नहीं करेंगे) नहीं तो हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं होगा, सामाजिक बहिष्कार होगा इत्यादि।

लेकिन पिता के कर्मों के आधार पर या उसकी जाति देखकर (जो प्रश्न 1 के हिसाब से अतार्किक हैं) उसके साथ अच्छा या बुरा व्यवहार करना या भेद करना या उसको शिक्षा से वंचित रखना यह तो एक उच्च व्यवस्था नहीं है और यह तो अव्यवस्था ही है।

उपसंहार!

इसलिए "वर्ण व्यवस्था के नाम पर किसी को इतना मत सताओ, कि अगर वह पढ़ना भी चाहे तो पढ़ ना पाए कैसे भी करके पढ़ने स्कूल पहुंच जाए तो उसको क्लास के बाहर बैठकर पढ़ना पड़े वह भी बैठने अपनी चटाई अपने साथ लेकर आना पड़े। इतना मत सताओ कि, प्यास लगने पर पानी भी न पी सके । इतना मत सताओ, कि नीच जाति का होने से अस्पताल में इलाज न मिलने के कारण अपनी पत्नी की मृत्यु देखना पड़े । इतना मत सताओ, कि घर की दीवार पर यदि पैर रखकर खड़ा हो जाए, तो उसे मार खाना पड़े फिर दीवार को धोना भी पड़े। इतना मत बताओ, कि व्यक्ति 3 लाख 80 हजार लोगों को साथ में लेकर बौद्ध धर्म में पहुंच जाए। इतना मत सताओ, कि राज्य के राज्य धर्म परिवर्तन कर लें। इतना मत सताओ कि, हम 100 से 70 हो जाएं और ऐसे ही अगर चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम 10 भी न बचेंगे।"

हां, कोई अगर सच में तपस्वी है, ज्ञानी है, संयमी है, दोषों से मुक्त है, तो वह कहे कि हम ब्राह्मण हैं तो समाज में आता है उसको ब्राह्मण का सम्मान मिलना भी चाहिए, लेकिन ज्ञानहीन, संयमहीन, असभ्य व्यक्ति कहे कि हम तो ब्राह्मण हैं इसलिए हम श्रेष्ठ हैं अन्य जाति का व्यक्ति चाहे कैसा भी हो, हमसे नीचे ही रहेगा। तो यह बातें भेद डालने वाली हैं ईर्ष्या का कारण बनती हैं। यह कुछ बातें इस लेख के माध्यम से संक्षिप्त में कहीं हैं, आगे कभी भविष्य में इस विषय पर विस्तृत लेख लिखने का भी प्रयास करूंगा। जिसमें इस व्यवस्था का समाधान भी होगा। धन्यवाद। प्रणाम ।

|| समाप्त ||